IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

काव्य में प्रयोग का अस्तित्व

विधा – शोध आलेख

परिचय – डॉ. राजेश कुमार बिंवाल

मु.पो. रघुनाथगढ़, सीकर **राजस्थान**

प्रयोग हर क्षेत्र में निरन्तर होते आये है। हर क्षेत्रों में किए गये प्रयोग की अपनी – अपनी परिसीमा है। काव्य के क्षेत्र में आधुनिककाल में हुआ है, ऐसा नहीं हैं। काव्य के क्षेत्र मे प्रयोग शब्द का प्रचलन तारसप्तक से हुआ। अज्ञेय जब दूसरा सप्तक की भूमिका मे स्वीकार करते हुए कहते है कि "प्रयोग निरन्तर होते आये है और प्रयोगों के द्वारा ही कविता या कोई भी कला कोई भी रचनात्मक कार्य आगे बढ़ सका है। इसका आश्य ये लगाना चाहिए कि आदिकाल से अब तक के साहित्य में प्रयोग होते रहे है आगे होते रहेंगे। ये बात अलग है कि प्रयोग जैसी धारणा खड़ी नहीं हो पाई। साहित्य में स्थापित सम्प्रदाय या सिद्धान्त प्रयोग का नमूना है। पहले पहल आधुनिक काल में तारसप्तक से प्रयोग की उद्घोषणा को स्वीकार किया गया। पूर्व के प्रयास एकाकी थे। सप्तक में प्रयोग की धारणा को एक साथ लेकर चलने वाली विचार पीढ़ी आगे बढ़ी। सप्तक के प्रयोग से पूर्व प्रयोग छायावाद में मिलने लगते है। निरालाजी का, काव्य प्रयोग धर्मी काव्य है मुक्त छंद की रचना, पंत जी का अंलकारो के मोह बंधन को त्यागना साहित्य के प्रयोग थे। प्रगतिवादियों का भाषा और देशकाल से आगे बढ़कर वैश्विक समुदाय की भागीदारी को जुङकर नये प्रयोग किए। साहित्य दरबारी संस्कृति से मुक्त होकर आधुनिक काल में लोक सम्मत साहित्य रचा। जनसामान्य की रूचि, प्रवृत्ति, विचार, विश्वास, धारणा का साहित्य रचा गया। सप्तकों से पूर्व नये आदर्श स्थापित छायावाद में करने के प्रयास शुरू हो गये। स्पष्ट रूप से पहली प्रयोगधर्मी काव्य का स्वर सप्तक में ही आया। हालांकि ये प्रयास जानबूझकर धारा से अलग जाने वाले रचनाकारो का एक षङयंत्र सा ही था परन्तु इसका परिणाम सकारात्मक ही पङा।

अज्ञेय की 'साँप' की कविता में उपमान का प्रयोग (परम्परागत को छोङकर) का नये तरीके से व्यंग्य की सर्जना की गई। मुक्तिबोध ने पहली बार फैटेंसी का प्रयोग इतनी प्रचुरता से किया। सप्तकों की रचना गद्यात्मकता की लय व भाषा लेकर अवतरित हुई। अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए बेझिझक अंग्रेजी का प्रयोग। शब्दार्थ के सम्बन्धों की गतिशीलता और तीव्र हुई। शमशेर सिंह बहादुर तथ्यों की पङताल के लिए खोज की बजाय कहते है –

बात बोलेगी

हम नहीं,

भेद खोलेगी

बात ही।

सत्य का मुख

झूठ की आँखे

क्या – देखें !

सत्य का रूख

समय का रूख है,

अभय जनता को

सत्य ही सुख है,

सत्य ही सुख।

कवि का प्रयोग ये कह रहा कि लोहे को लोहा काटता है वैसे ही बात स्वयं अपने स्वरूप को स्पष्ट और विश्लेषण कर देगी। सत्य स्वयं उपस्थित हो जाता है।

छंद के बंधन पहले ही टूट चुके, अंलकार की माला काव्य की काव्य से पहले उतर चुकी। सप्तक को प्रयोग की शाला इस लिए कहा जा सकता है क्योंकि सप्तक में 'कविता को प्रयोग का विषय' की मात्र उद्घोषणा नहीं हुई थी। इसमें भाषा, शैली, प्रतीक, बिम्ब, फैटेंसी के नये – नये सन्दर्भ लेकर प्रयोग किए गए। कविता में प्रयोग का सन्दर्भ अभिजात्य वर्ग नहीं रहा। दुर्बल और हाशिये पर खड़े लोगों के जीवन की अनुभूतियों के प्रयोग का साहित्य था। अस्तित्त्व वाद से जीवन का सार सामने रखा गया। वेदना को यथार्थ के धरातल पर ही उतारा गया

भारत भूषण अग्रवाल की कुछ पंक्तियाँ –

चुक गया जब नेह, बाती जर गई

मत करो चीत्कार

पगले !

X X X

प्रज्ज्वलित है प्राण में अब भी व्यथा का दीप

ढाल उसमें शक्ति अपनी

लो उठा !

X X X

मुक्ति का बस है यही पथ एक !

तर्क और बुद्धि का प्रयोग इस साहित्य की विशेषता है। दर्शन का प्रयोग भी कवि करते चले।

अज्ञेय दार्शनिक गुरू जैसी वाणी में पीङा अर्थात वेदना के सम्बन्ध दीक्षा – गुरू का प्रवचन, भी सुनने योग्य –

दुःख सबकों माजता है

और.....

चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने, किन्तु

जिनको माँजता है।

उन्हें यह सीख देता है कि सबकों मुक्त रखे।

दर्शनशास्त्र का प्रयोग साहित्य में नया तो नहीं किंतु शैली नई है। सॉनेट का प्रयोग भी हो रहा था। रोमानी कविताओं के गिरिजा कुमार माथुर ने छोटी और मीठी ध्वनि वाले बोलचाल के शब्दों का प्रयोग किया। रोमानी कविताएँ हिन्दुस्तानी भाषा में लिखी। कलासिक्ल कविताओं में आर्य गुण लाने के लिए बङी लम्बी और गम्भीर ध्वनि वाले शब्द रखे गये। ध्वनि विधान में प्रयोग मुख्यतः स्वर ध्वनियों के है। व्यंजक ध्वनियों से उत्पादित संगीत से कविता में संगीत की लय मधुर नहीं होती। इस काव्य में मुक्त छंद के दो भाग विभक्त है वर्णिक और मात्रिक तथा इनके रूपान्तर। वर्णिक में कवित्तों के विरामों के उनके रूपान्तर लेकर ही चले। अर्ध विराम भी शुद्ध माने गये। सप्तकों के कवियों ने कविता में विषय से अधिक टेकनीक पर ध्यान दिया गया। टेकनीक के अभाव में कविता अधूरी सी जान पङती।

नवीन उपमानों का संयोजन भी बङा देखे –

जीवन में लौटी मिठास है।

गीत की आखिरी मीठी लकीर सी।

वैभव की वे शिलालेख – सी यादें आती

एक चाँदनी भरी रात उस राजनगर की

रनिवासों की नंगी बाहों सी रंगीनी।

वह रेशमी मिठास मिलने के प्रथम दिनों की।

उपमा के लिए नये प्रयुक्त पद जीवन की मिठास की उपमा, गीत की आखिरी लकीर, यादों की शिलालेख, रंगीनी की रनिवासों की नंगी बाहों से, मिलन की मधुरता रेशमी 'मिठास'।

अप्रस्तुत विधान से भी नई – नई उपलब्धि –

कवि मदन वात्स्यायन ने परकीया के मुख का बैंगन जैसा दिखाई पडा।

'नीड़ो का सुबह' कविता में बिम्ब का प्रयोग परम्परागत बिम्ब से विचित्र –

रात के कम्बल में
दुबकी उजियाली ने
धीरे से मुँह खोला
नड़ों में कुल बुलाकर
अलसाया – अलसाया
पहला पंछी बोला

(तीसरा सप्तक, कुँवर नारायण)

धर्मवीर भारती ने 'घाटी का बादल' में रंग, स्पर्श और ध्वनि पर आधरित दृश्यों से प्रकृति चित्रण–

धीरे – धीरे परतें कटने लगी धूम की
यहाँ – वहाँ पर
पिघले सोने के पानी – सी
धूप टपकने लगी
गाँव खिल गए फूल से

प्रयोगवादी साहित्य में ध्वनि की प्रमुखता है। रस ध्वनि के आधार पर ही काव्य अभिव्यक्ति के लिए परिगणन शैली अपनी। प्रेषणीयता के सिद्धान्त के लिए भौतिक साधन सुलभ भाषा का प्रयोग किया। ओज गुण के प्रासाद गुण के भी प्रयोग किये। रीति का प्रयोग नहीं रीति के स्थान शैली की प्रमुखता है। औचित्य और वक्रोक्ति का भी साहित्य में प्रयोग किया गया।

अज्ञेय को सप्तकीय योजना से अवगत कराने के बाद। अज्ञेय ने इस योजना में अपनी प्रमुख भागीदारी निभाने की वैचारिकता के साथ साहित्य में नयें आयाम स्थापित करने के लिए पहले से ही बैचेन थे। विज्ञान के छात्र होने के कारण उर्जस्वी और ओजस्वी भी थे। भगतसिंह के सम्पर्क में भी आये। बम बनाना भी

जानते थे। कहने का आशय ये है कि अज्ञेय क्रान्तिकारी वातावरण में जवान हुए उसी जवानी में क्रान्ति की मानसिक भूमि तैयार हुई। अज्ञेय देश की वर्तमान/समकालीन स्थिति से सन्तुष्ट नहीं थे।

असन्तुष्टता जीवन में संतुलन के नये बिन्दु खोजती है। तथा नये प्रयोगों को अवसर प्रदान करती है। यहीं मूलमंत्र संभवतः अज्ञेय जी ने अपनाया। सप्तक के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी में नये द्वार खुल गये। तारसप्तक हिन्दी साहित्य का अपनी तरह का प्रथम साझा काव्य संकलन है। इसके प्रकाशन के बाद साझा संकलनों की झड़ी लग गई। ये भी प्रकाशन के संदर्भ में एक प्रयोग था जो चल गया। तारसप्तक के कवि अलग – अलग मनोवृति के थे उनको साथ लाकर तारसप्तक ने यह धारणा स्थापित की कि विभिन्नता या विविधता में एकता ही भारत की पहचान है जो आगे चलकर भारत के संविधान की विशेषता भी बनी। ये विविधता में एकता विचार अप्रत्यक्ष रूप से तारसप्तक ने दिया। जब तार सप्तक का प्रकाशन हुआ समय भारतीय संविधान की रूपरेखा नही बनी थी। स्वतंत्रता के समय ही संविधान की वास्तविक रूपरेखा उभरी। उससे पहले संवैधानिक विशेषता भारत में स्थित सामाजिक–सांस्कृतिक गतियों तक सिमटी थी। सप्तकों और नई कविता की हिन्दी साहित्य की सबसे बड़ी देन घुटते हुए मनुष्य की खोज करना थी। बैचेन मन की अभिव्यक्ति ही सबसे बड़ी प्रवृत्ति है। जहाँ पूर्व की काव्यधारा के कवि स्थूल प्रवृत्तियों को काव्य में उतारते थे। वही प्रयोगवादी व नई कविता के कवि अचेतन मन की अभिव्यक्ति को प्रमुखता देते है। अभिव्यक्ति के लिए वे न सिर्फ कल्पना करते है बल्कि कल्पना के लिए भी वे अचेतन की विवेक गुहा में जाकर दमित, शमित, पलायनवादी, प्रत्यागमन, प्रत्यावर्त, उपागम द्वन्द्व आदि अनेक धारणाओं को फिर से उपजाकर सकारात्मक पथ का निर्माण करने की चेष्टा करते रहते थे। प्रयोग न सिर्फ भौतिकवाद तक सिमित है, इनका प्रयोग मनोविज्ञान की मनोरचनाओं तक विस्तृत है।

जहाँ आज स्कूलों में जीवन कौशल के माध्यम में किशोरों को शारीरिक गतिविधि का ज्ञान कराते है, ये गतिविधि तो प्रयोगवाद व नई कविता के कवियों ने खुलकर अपनाई। प्रयोगवादी कवि कायिक चेष्टाओं की अपेक्षा मनोरचना व वचन न चेष्टा पर ज्यादा जोर देकर किशोरों को समझना चाहते है। सौन्दर्य के लिए प्रस्तुत – अप्रस्तुत विधान के प्रयोग नहीं करते बल्कि सौन्दर्य के लिए शरीर की उर्जा और ओज उचित ठहराते है।

"मेघ – आकुल गगन को मैं देखता था
बन विरह के लक्षणो की मूर्ति –
सूक्ति की फिर नायिकाएँ
शास्त्र – संगत प्रेम – क्रीड़ाएँ,
घुमड़ती थीं बादलों में
आर्द्र, कच्ची वासना के धूम – सी।"

(सावन–मेघ : तारसप्तक – अज्ञेय)

प्रयोगवादी तथा नई कविता की काव्यभाषा में समानांतरता का प्रयोग भी किया है। समानांतरता से अभिप्राय है रचना में समान या विरोधी भाषिक इकाईयों को एक – सा प्रयोग। प्रयोगवादी तथा नई कविता में समान या विरोधी भाषिक इकाइयों की आवृत्ति से रचना में संतुलन आ गया। यही संतुलन काव्य के सौन्दर्य को

बढ़ाता है। शैली विज्ञान के मार्मिक विश्लेषण वाले सौन्दर्य का प्रयोग सप्तकों में हुआ है। यहाँ सौन्दर्य लाने के लिए अनेक युक्तियाँ काम में ली। पयार्यवाची शब्दों के अतिरिक्त विशेषण, उपमान, पद–रचना, समास – रचना, वाक्यांशों और वाक्यों के चयन द्वारा भी कवि अपनी रचनाओं को और अधिक कलात्मक एवं प्रभविष्णु बनाता है। संक्षेप में कहे तो सप्तक सिर्फ भाषा और उसके रूपात्मक प्रयोग तक ही सीमित नही था। व सप्तक में सामाजिक, व्यैक्तिक, मनोगतिक, जैविक, भौतिक सब तरह के प्रयोगों का आधारभूत ढाँचा मौजूद है। ये ढाचाँ ही साहित्य की प्रयोगशाला बना।

1. तारसप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, ग्यारहवाँ संस्करण: 2014

2. हिन्दी साहित्य कोश (भाग – 1) प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण : 2005

3. हिन्दी साहित्य का इतिहास सं. डॉ नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स नोएडा संस्करण : 2013

4. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास (खण्ड – 2) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

5. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ, डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सोहलवाँ संस्करण : 2013

6. दूसरा सप्तक – अज्ञेय

7. तीसरा सप्तक – अज्ञेय

8. चौथा सप्तक – अज्ञेय

9. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी

10. आधुनिक साहित्य सजृन और समीक्षा – आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी

11. वाद – विवाद और संवाद – नामवर सिंह

12. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नामवर सिंह

13. कविता के नये प्रतिमान – नामवर सिंह

14. नया साहित्य: नये प्रश्न: नंद दुलारे वाजयेपी